पर्यटन पुलिस पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

पर्यटन पुलिस पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में इस मंत्रालय के पर्यटन और संस्कृति मंत्री, पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री, माननीय **श्री जी. किशन रेड्डी जी**, **श्री श्रीपाद येसो नाईक जी**, पर्यटन सचिव श्री अरविन्द सिंह जी, निदेशक, डीपीआरडी, बालाजी श्रीवास्तव जी, सभी राज्यों के पुलिस व अधिकारीगण, पर्यटन सेक्रेटरी और अधिकारीगण, आज एक महत्वपूर्ण विषय पर इस राष्ट्रीय सम्मेलन में चर्चा और संवाद होगा। अपने-अपने राज्यों के दृष्टिकोण और अनुभव साझा करेंगे।

हम किस तरीके से देश के अंदर देशी और विदेशी पर्यटकों को सुरक्षा और संरक्षा दे सकें, एक अच्छा वातावरण हम पर्यटकों को दे सकें, इसमें विशेष रूप से कुछ राज्यों की पुलिस पर्यटकों की व्यवस्था संभाल रही है, कई राज्यों में पर्यटक पुलिस का गठन हुआ है और कई राज्यों में नहीं हुआ है। लेकिन हमारी महती जिम्मेदारी है कि एक सकारात्मक वातावरण हम देश के अंदर बना सकें।

जब किसी राज्य या देश में लॉ एंड ऑर्डर बेहतरीन होता है तो वहां देशी और विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। भारत की विविधता, विशालता, संस्कृति, ऐतिहासिक पर्यटक स्थल और हमारी विरासत के बारे में जी. किशन रेड्डी जी ने बताया। दुनिया के अंदर भारत एक ऐसा देश है जहां पर प्राकृतिक संसाधन है, आध्यात्मिक संस्कृति है, ऐतिहासिक पुरातत्व के कई स्मारक हैं, हमारे यहां एडवेंचर है, हमारे देश के अंदर जितनी विविधता है, उतनी विश्व में कहीं भी नहीं है, वैसी विविधता भारत के अंदर ही है।

दुनिया के अंदर भारत पर्यटन के रूप में एक बेस्ट डेस्टिनेशन बन सकता है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि हमारी जो संस्कृति है, स्मारक हैं और आध्यात्मिक केन्द्र है, दुनिया के अंदर आज भी पर्यटक केवल घूमने के लिए जाते हैं, लेकिन भारत एक ऐसा देश है, जहां पर्यटक घूमने के अलावा योग, प्राकृतिक मेडिकल टूरिज्म, एजुकेशन टूरिज्म और संस्कृति टूरिज्म के लिए भारत आते हैं। इस विशाल देश के अंदर अलग-अलग राज्यों की अलग-अलग संस्कृति है, अलग-अलग खानपान है, अलग-अलग वेशभूषा है, अलग-अलग कला है, संस्कृति है, शिल्पकार हैं, मेले हैं, ये हमारी विविधताएं हैं, जिसके कारण हम दुनिया के पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं।

इसके लिए पर्यटन विभाग लगातार काम कर रहा है, लेकिन हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि जो देशी और विदेशी पर्यटक यहां आ रहे हैं, उनको पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा और संरक्षा मिले, उनको एक अच्छा वातावरण मिले। 'पधारो म्हारे देश' हमारी संस्कृति है, इसकी झलक वहां पर नजर आए। इसके लिए हमें एक व्यापक विचार-विमर्श करके योजना बनानी पड़ेगी।

दुनिया के अंदर अलग-अलग भाषाएं हैं। मैं जब स्पीकर्स कॉन्फ्रेंस में जाता हूं तो देखता हूं कि बहुत सारे ऐसे देश हैं जो अपनी भाषा में बात करते हैं। जिन स्पीकर्स की उम्र 50-60 साल होगी, वे भी अपनी भाषा में बात करते हैं। बहुभाषी होना चाहिए और विदेशी पर्यटकों के आधार पर हम भारत में उनके लिए कैसी योजना बना सकते हैं, उस पर आपको विचार-विमर्श करना पड़ेगा, सबसे बड़ी संवाद और चर्चा का केन्द्र होना चाहिए। जो विदेशी पर्यटक भारत आ रहे हैं, दुनिया के अंदर टूरिस्ट ट्रेवल्स हैं या वैयक्तिगत टूरिस्ट भी आता है।

आज डिजीटलीकरण के कारण भारत और विश्व एक हो गया है, डिजिटल में सब कुछ दुनिया देख लेती है। यहां आने से पहले ही पर्यटक को किस स्थान पर जाना है, उसकी क्या विशेषता है, उसका निश्चित चयन करके ही पर्यटक आता है।

हमारे जो गाइड हैं, गाइडों और पर्यटक पुलिस को हम बहुभाषा के अंदर भाषा का कुछ-कुछ अंश सिखाने का प्रयास करें, तो हम पर्यटकों को बेहतर सुरक्षा दे सकते हैं।

मेरा आग्रह है कि इसके लिए एक ऐप डेवलप करना चाहिए, इस ऐप के अंदर यहां जो भी पर्यटक आता है, अगर वह ऐप डाउनलोड कर दे तो दुनिया की अधिकतम भाषाओं के अंदर उन टूरिस्ट स्थलों की जानकारी उपलब्ध हो, अगर कोई भी घटना घटती है तो पुलिस हेल्पलाइन और सारी जानकारी उस ऐप के अंदर डेवलप हो जाए। जैसे ही टूरिस्ट आए और उस ऐप को डाउनलोड कर ले, तो वह उस राज्य से कनैक्ट हो जाएगा और उस देश से कनैक्ट हो जाए।

इसके साथ-साथ हमारी योजना इतनी परफेक्ट होनी चाहिए कि जब कोई टूरिस्ट किसी राज्य में आता है, तो उस राज्य में आने के बाद पुलिस थाना को पता चल जाए कि अमुक टूरिस्ट यहां पर आया है और होटल में ठहरा है, धीरे-धीरे हम उसको ट्रैक करने लगेंगे। जो अवांछित गतिविधियां करने वाले लोग हैं, जो विशेष रूप से

टूरिस्ट को लपक कर अलग-अलग भाषा में कहते हैं, अगर हमने उनको रोक लिया और हरेक पर्यटन स्थल पर बहुभाषी के माध्यम से बताने का काम कर दिया, चाहे पुलिस हेल्पलाइन हो या कोई भी जानकारी हो, तो वह वहां बूथ पर जाकर अपनी भाषा में जानकारी प्राप्त कर लेगा और उसके आधार पर सर्विस डिलीवरी हो जाएगी, इसके लिए हमें यहां पर चर्चा और संवाद करना चाहिए।

आपको अपने-अपने राज्यों का लंबा अनुभव है। मेरा मानना है कि जिन राज्यों ने पर्यटक पुलिस दल बनाया है, उसका जल्दी स्थानांतरण नहीं होना चाहिए। एक लंबे समय तक उसकी ट्रेनिंग हो, ऐसी कोशिश हो कि उसको अधिकतम लैग्वेंज हम सिखा सकें।

हमारे जो गाइड हैं, उनको बहुभाषा में प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। महिला गाइड भी होनी चाहिए, महिला गाइड को भी बहुभाषी होनी चाहिए। अगर हम इस तरीके से प्रयास करेंगे तो सामान्य रूप से दुनिया भर से आने वाले टूरिस्टों को लगेगा कि हम अपनी भाषा में यहां पर बातचीत कर सकते हैं, संवाद कर सकते हैं, कोई जानकारी अपनी भाषा में ले सकते हैं, टूरिज्म स्थलों की जानकारी भी ले सकते हैं, मार्केट की जानकारी ले सकते हैं।

आपको लंबा अनुभव है, जब भी कोई टूरिस्ट आता है, तो दुकानों का सैलेक्शन भी तय होता है और गाइड उसको उस दुकान पर लेकर जाता है। एक ऐप के अंदर सारी जानकारी उसको अपनी भाषा में मिल जाएगी कि कहां-कहां उसको क्या-क्या चीज खरीदनी है।

उसके बाद, वह उसको क्लिक करके जानकारी प्राप्त कर लेगा और रेट भी मालूम कर लेगा। अब तो इतना ऑनलाइन सिस्टम पैदा हो गया है कि देशी पर्यटक भी जाने से पहले ऑनलाइन बुकिंग कराकर सारा इंतजाम करके जाता है। विदेशी पर्यटक तो सारी तैयारी के साथ आते हैं। कभी-कभी कुछ घटनाएं घट जाती हैं। जैसा साइट पर बताया जाता है, वैसा होटल नहीं होता है। वह एक अलग घटना है। लेकिन, 90 परसेंट पर्यटक, चाहे वे देशी पर्यटक हों या विदेशी वे ऑनलाइन बुकिंग कराकर ही कहीं जाते हैं।

मेरा मानना है कि जब आप एक दिन की चर्चा या संवाद करेंगे तो उसमें आपके जो अनुभव हैं, जो घटनाएं घटी हैं, आप उन घटनाओं को केस स्डटी के रूप में परिणाम लाने या उस केस की जल्दी सुनवाई करने के बारे में

सोचिए, क्योंकि कई राज्यों में इस मामले में बेहतरीन काम हुए हैं। किसी-किसी राज्य में अपराधियों को तीस दिन के अंदर सजा मिली है।

इससे जितने भी अवांछित लोग हैं, जो लोगों को प्रताड़ित करते हैं या विदेशी पर्यटकों के साथ घटना को अंजाम देते हैं, वे सोचेंगे कि न्यायिक व्यवस्था इतनी तीव्र गति की होगी कि 30 दिनों के अंदर मुझे सजा मिल जाएगी और मैं जेल से बाहर नहीं निकलूंगा तो शायद हम एक अच्छे वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। आज यह पर्यटकों के लिए सबसे बड़ी जरूरत है।

दुनिया के अंदर कहीं भी चले जाएं वहां लॉ एंड ऑर्डर सबसे बड़ा विषय होता है। किसी भी देश के अंदर चाहे कुछ प्राकृतिक पर्यटक स्थल अच्छे हों या बुरे हों, लेकिन यदि वहां का लॉ एंड ऑर्डर बेहतरीन होगा, तो पर्यटक उस देश में जरूर जाएगा। यदि किसी भी देश के अंदर चाहे कितने भी बहुआयामी पर्यटन स्थल हों, लेकिन यदि वहां लॉ एंड ऑर्डर बेटर नहीं होगा, तो वहां कोई पर्यटक नहीं जाएगा।

मंत्री जी की जो सबसे बड़ी चिंता है और मंत्री जी ने जो कांफ्रेंस का आयोजन किया है, उसमें यही बात सामने आई है कि हमें पर्यटकों की सुरक्षा के बारे में व्यापक विचार-विमर्श करना पड़ेगा। अपने राज्य में एक भी घटना न घटे और एक भी शिकायत न आए, उसके लिए हमें प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमें उन राज्यों का उदाहरण देना चाहिए। हमें उन राज्यों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है कि उन राज्यों ने किस तरीके से देशी और विदेशी पर्यटकों के लिए बेहतरीन सिस्टम डेवलप किया है। उसके कारण वे अपराधों को रोकने में कामयाब हुए हैं। यह सेमिनार, इसकी चर्चा और संवाद हमारे लोकतंत्र की ताकत बनेगी। हम जो भी चर्चा और संवाद करते हैं, उसमें हम अपने-अपने अनुभव और विचारों को साझा करते हैं। हम बेस्ट प्रैक्टिस से उसको साझा करते हैं। उसमें मंथन के बाद जो परिणाम निकलता है, उससे अन्य राज्य भी प्रेरणा लेते हैं।

मुझे लगता है कि आप ऐसा ही प्रयास इस एक दिवसीय सेमिनार में करेंगे। दुनिया के अंदर भारत पर्यटन की दृष्टि सबसे महत्वपूर्ण डेस्टिनेशन है। मुझे विश्वास है और आज मैं कह सकता हूं कि दुनिया के अंदर भारत सुरक्षा की दृष्टि से जो हमारी संस्कृति है उसके कारण विदेशी पर्यटकों के साथ कोई घटना न घटे, उसके लिए राज्य के साथ-साथ केंद्र भी सतर्कता से काम करती है। यह हम सब जानते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है। दुनिया के अंदर ऐसे कई देश हैं, जहां केवल टूरिज्म ही एक ऐसा सेक्टर है, जिससे उनकी इकोनॉमी चलती है। कोरोना काल में आपने कई देशों में देखा होगा कि जैसी ही कोरोना आया, वहां पर्यटकों के नहीं आने के कारण उनकी इकोनॉमी कोलैप्स हो गई। पर्यटन का महत्व किसी भी देश के आर्थिक और सामाजिक कल्याण के लिए कितना महत्वपूर्ण है, इसको आप बेहतरीन तरीके से जानते हैं।

मुझे आशा है कि आज इस सेमिनार के अंदर हम बेस्ट प्रैक्टिस से बेस्ट अनुभव को साझा करेंगे। इस एक दिवसीय कांफ्रेंस में, जैसा बालाजी ने बताया कि केंद्र और राज्य मिलकर प्रयास कर रहे हैं कि अपराध मुक्त भारत के अंदर विदेशी पर्यटक के साथ कोई भी घटना न घटे। मुझे लगता है कि ऐसे बेस्ट प्रैक्टिस आप सब भी अपने-अपने राज्यों में अपनाने का प्रयास कीजिए।

आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।